मासिक पत्रिका जनवरी 2024

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

Maharishi Dayanand Saraswati Marg, B-31/C, Kailash Colony, New Delhi-110048

Tel.: 46678389, 9310140742 ● E-mail: samajarya@yahoo.in ● Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	राजेन्द्र कुमार वर्मा	अरुण बहल
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

आपको तथा आपके परिवार व प्रियजनों को अच्छे स्वास्थ्य तथा समृद्धि के लिये नव-वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वैदिक-संस्कृति की आज के युग को चुनौती

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारत में कुछ सांस्कृतिक संस्थाओं ने जन्म लिया। उत्तर-भारत में आर्य-समाज, दक्षिण में ब्रह्म-समाज, प्रार्थना- समाज आदि की नींव पड़ी। इस काल में ऋषि दयानन्द हुए, राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन आदि हुए। उसके बाद के काल में रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अरविन्द घोष, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा गाँधी आदि हुए। इन सबके कार्य का मुख्य बिन्दु भारत की संस्कृति का पुनर्जीवन था। आर्य समाज ने वेदों की ओर, वैदिक संस्कृति की ओर देश का ध्यान खींचा, गुरुकुलों की स्थापना की, भारतीय संस्कृति की तरफ़ देश का ध्यान केन्द्रित कर दिया। इस समय देश में जगह-जगह संस्कृत पाठशालाओं की भी भरपूर स्थापना हुई, ऐसी पाठशालाओं की जिनका मुख्य ध्येय प्राचीन- संस्कृति, प्राचीन साहित्य, प्राचीन-परम्परा की साधना थी। अंग्रेज़ों के चले जाने और देश के स्वतन्त्र हो जाने के बाद हमारी भारतीय-संस्कृति की लग्न को भी साथ लेते गये। कई लोगों का तो कहना है कि अंग्रेज़ गये परन्तु अंग्रेज़ियत को पीछे छोड़ गये।

जब अंग्रेज़ इस देश में शासन करते थे तब राजनीति का क्षेत्र एक बन्द क्षेत्र था। अधिकाँश व्यक्तियों ने अपने लिए इस क्षेत्र को बन्द ही पाया। इसका परिणाम यह था कि जिन लोगों में कुछ कर डालने की लालसा थी वे सांस्कृतिक क्षेत्र में कार्य करते रहे, और इस क्षेत्र में देश के उच्चकोटि के कार्यकर्त्ता आते रहे। उस समय यह कोई नहीं पूछता था संस्कृत पढ़ने का क्या लाभ है, उस समय यह कोई नहीं पूछता था कि भारतीय-संस्कृति क्या है और इस संस्कृति का क्या लाभ है। भारत की संस्कृति के प्राण-त्याग, तपस्या, नि:स्वार्थ भाव, सेवा आत्मोत्सर्ग-यही कुछ रहे हैं। इन भावनाओं का वेग जब प्रबल हो गया, स्वार्थ, भोग-विलास का वेग जब धीमा पड़ गया, तभी देश स्वतन्त्र हुआ।

जिन लोगों की तपस्या के कारण सांस्कृतिक-क्षेत्र को हम, अंग्रेज़ों के समय, हरा-भरा देखते थे, वे या उस प्रकार की शक्ति वाले लोग इस क्षेत्र को छोड़ते चले जा रहे हैं।

तो क्या हमारी संस्कृति में ऐसी कुछ बातें नहीं हैं जो हमारे युवकों को अपनी तरफ़ खींचें? ऐसी बात होती तो अपने देश की संस्कृति अब तक जीवित ही क्यों रहती? संसार की संस्कृतियाँ मिट गईं परन्तु भारतीय संस्कृति आज तक जीवित है-यह क्यों? जब किन्हीं दो देशों की संस्कृतियों का टकराव होता है तब उनमें एक-दूसरे के प्रति प्रतिक्रिया होती है। अगर किसी देश की संस्कृति प्राणवती है, बलवान् है, तो वह निर्बल संस्कृति को खा जाती है, अगर वह कमज़ोर है तो बलवती संस्कृति के सामने अपने को मिटा देती है, अगर दोनों संस्कृतियाँ तुल्य-बल की हैं, दोनों प्राणवान् हैं, दोनों के अपने-अपने मज़बूत आधार हैं, तो इन दोनों संस्कृतियों का पहले विरोध होता है, फिर समय बीत जाने पर उनका आदान-प्रदान होता है, वे एक-दूसरे का कुछ लेती है, कुछ अपना छोड़ती है।

अब तक जो विदेशी भारत में आये थे वे संस्कृति की दृष्टि से शून्य थे, मुसलमान संस्कृति की दृष्टि से शून्य नहीं थे, उनकी अपनी एक संस्कृति थी और प्रबल संस्कृति थी। भारतीय संस्कृति को खतरा यह था कि अगर यह अपने को नहीं बदलती

तो तलवार भी चल सकती थी। इस्लाम के सामने दुनिया की अन्य संस्कृतियों ने सिर झुका दिया था, परन्तु भारत की संस्कृति की यह विशेषता दिखलाई देती है कि इस्लाम के साथ टक्कर में हमने अपना देश भले ही गँवा दिया, परन्तु हमारी संस्कृति ज्यों-की-त्यों अडिग खड़ी रही। अपने देश की संस्कृति की रक्षा के लिए उत्तर-भारत में सिक्खों के गुरु उठ खड़े हुए, दक्षिण-भारत में शिवाजी ने लोहा लेना शुरु किया। मुसलमानों का 800-900 वर्षों का काल निकल गया परन्तु इस देश की संस्कृति ने गर्दन नहीं झुकाई। इन सबका परिणाम यह हुआ कि यद्यपि इस्लाम में औरंगज़ेब जैसे असहिष्णु बादशाह हुए परन्तु उसके साथ ही अकबर जैसे बादशाह भी हुए, दारा जैसे व्यक्ति भी हुए जिन्होंने उपनिषदों का अनुवाद किया और इस देश की संस्कृति से इतने प्रभावित हुए कि उन्हें मुसलमानों तक ने काफ़िर कहना शुरु कर दिया। मुसलमानों के बाद इस देश में अंग्रेज़ आये। अंग्रेज़ भी आक्रान्ता बनकर आये, परन्तु आक्रान्ता होने के साथ-साथ इनकी भी एक संस्कृति थी, वह संस्कृति जिसे पाश्चात्य- संस्कृति कहा जाता है, भौतिक संस्कृति।

अंग्रेज़ आये थे सौदागर बनकर, व्यापारी बनकर, रुपया कमाने, सौदागरी से वे हुकूमत करने लगे। अंग्रेज़ इस देश में अपनी संस्कृति का प्रचार करने नहीं आये थे, परन्तु उनके साथ उनकी संस्कृति का आना स्वाभाविक था। मुसलमानों की संस्कृति धर्म पर आधारित थी, धर्म की दृष्टि से भारतीय संस्कृति के साथ वह टकराती रही। अंग्रेजों की संस्कृति धर्म पर आधारित नहीं थी, यह सर्वथा भौतिक थी, सांसारिक थी। भारतीय संस्कृति का आधार धर्म था, पाश्चात्य -संस्कृति का आधार धर्म नहीं था; भारतीय-संस्कृति के अंजर-पंजर ढीले हो गये, वह पाश्चात्य संस्कृति के सामने टिक नहीं सकी। आज हम अपनी संस्कृति का नाम भर लेते हैं, परन्तु वह संस्कृति नष्ट हो चुकी है। न उसमें हमारा विश्वास रहा है, न हम उसे अपने जीवन में उतारने के लिए तैयार हैं। अपने को धोखा देने से क्या फ़ायदा। हम अंग्रेज़ों को निकालना चाहते थे, अंग्रेज़ी संस्कृति को नहीं निकालना चाहते थे। अंग्रेज़ी संस्कृति को हम क्यों चाहने लगे थे? इस संस्कृति को हम इसलिए चाहने लगे थे क्योंकि हमें यह संस्कृति अपनी संस्कृति से, भारतीय संस्कृति से ज़्यादा मोहक, ज़्यादा प्राणवती, ज़्यादा बलवती दिखलाई दे रही थी। जनता का विश्वास नेताओं के विश्वास के पीछे चलता है। क्या कारण है कि हम सत्य और अहिंसा की उपासना करते हैं, परन्तु जहाँ स्वार्थ सिद्ध होता दीखता हो वहाँ झूठ बोलने के लिए और अपने पड़ोसी का गला काटने के लिए तैयार रहते हैं? इस देश की संस्कृति की बातें हमारे आदर्श के लिए रह गई हैं, हमारे जीवन में पाश्चात्य-विचार ठोस रूप में उतरे हुए हैं?

समय था जब इस देश की संस्कृति एक जीवित संस्कृति थी, प्राणवान् संस्कृति थी, उस समय हमारी संस्कृति के सब विचार जीवित विचार थे, आज वे सब विचार जीवित विचार नहीं रहे, मरे हुए विचार हो गये हैं। आखिर, विचार ही तो किसी संस्कृति को बनाते हैं। **मनुष्य जो-कुछ है, विचारों का परिणाम है।**

आज की स्थिति यह है कि हमारी संस्कृति को प्राणवान्, तेजस्वी बनानेवाले विचार हमारे पास नहीं रहे। यह संस्कृति अगर जीवित हो सकती है तो उन विचारों से जीवित हो सकती है जिन्होंने इस संस्कृति को संसार की अन्य संस्कृतियों मे मूर्धन्य बनाया था। उदाहरणार्थ, वैदिक-संस्कृति को प्राणवान् बनाने वाले विचार हैं-अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, त्याग, तपस्या, निष्काम-भाव, अपरिग्रह, वानप्रस्थ, संन्यास, पारलौकिक सत्ता में विश्वास, आत्मवाद। ये विचार किसी समय जीवित-जागृत विचार थे, ऐसे जीवित-जागृत जिससे हमारी संस्कृति भी जीवित-जागृत कही जा सकती थी। आज भी ये विचार मौजूद हैं, परन्तु आज इन विचारों में आत्मा नहीं दीखती, इन विचारों का खोल दिखलाई देता है। ये विचार नित्य हैं, अखण्ड हैं, भौतिकवादी भी इन विचारों को छोड़ नहीं सकता, परन्तु अब ये कहने को रह गये हैं, करने को नहीं रहे।

ब्रह्मचारी का क्या अर्थ है? क्या ब्रह्मचारी का यह अर्थ है कि जो पीली धोती पहनता हो, खड़ावें धारण करता हो। 'ब्रह्मचर्य' तो एक विचार है, आर्य-संस्कृति का विचार है, पीली धोती, खड़ाँव, तो उसका स्थूल रूप है। आज हमारी मौलिक समस्या ब्रह्मचर्य की नहीं है, 'ब्रह्मचर्य' शब्द को प्राणवान् तथा जीवित बनाने की है।

इसी प्रकार निष्कामता, त्याग, तपस्या, सत्य, मुनि, वानप्रस्थी, संन्यासी-ये शब्द हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। क्या ये शब्द आज जीते-जागते शब्द हैं या ये शब्द भी खोखले हो चुके हैं। क्या इनमें सार और सत्ता है या नहीं रही। वानप्रस्थीपन तो एक मनोवृत्ति का नाम था, वह मनोवृत्ति जिसमें संसार के प्रति अनासक्ति की, त्याग की, तपस्या की भावना पैदा हो जाती थी। कहने का अभिप्राय यह है कि हमारी संस्कृति कभी जीवित थी, जीवित थी का अर्थ है कि हमारी संस्कृति के

विचार निरे थोथे, खोखले, निर्जीव और निष्प्राण विचार नहीं थे, आज वे निष्प्राण हो चुके हैं-इस बात को समझना हमारे लिए ज़रूरी है।

वैदिक-संस्कृति की यही तो आधारभूत भावना है कि हर किसी को दुनिया एक-न-एक दिन छोड़नी है। जीते-जी अपनी मृत्यु देख लेना-यही तो संन्यास है।

भारत की संस्कृति में त्याग-तपस्या-ये ऐसे शब्द हैं जिन्हें कौन भूल सकता है, यहाँ का सारा जीवन त्यागमय था, तपस्यामय था।

संस्कृति केवल शब्दों का नाम नहीं है, सार्थक शब्दों का नाम है; संस्कृति दार्शनिक विचारों का नाम नहीं है, **संस्कृति क्रियात्मक विचारों का नाम है, संस्कृति विचारों की उस धारा को कहते हैं जो किसी देश या जाति के जीवन में उतरती जाती है।**

कहाँ है वे लोग जो राज्य भी करते थे और ठीक समय पर राज को छोड़ भी देते थे, संसार के ऐश्वर्यों को भोगते भी थे और समय आने पर उन्हें त्याग भी देते थे। संस्कृति केवल विचारों का नाम नहीं है, संस्कृति किन्हीं विचारों को आचार में लाने का नाम है।

हमारी संस्कृति की असली समस्या उसे पुनर्जीवित करने की है। अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य-वर्ण-व्यवस्था, सोलह संस्कार, अपरिग्रह, निष्कामता, त्याग, तपस्या, ईश्वर, जीवात्मा, परमात्मा, भोग-त्याग, इह-लोक, पर-लोक-आज ये सब शब्द खोखले हो चुके हैं, इन खोखले शब्दों को फिर से प्राणवान् बनाना, इनमें जीवन भरना-यह है हमारी असली समस्या।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश के नवयुवकों का ध्यान संस्कृति से हटकर राजनीति की तरफ़ चला गया है। संस्कृति का उद्देश्य देश में एकता लाना होता है, एकता से शान्ति आती है। राजनीति का आधार शक्ति प्राप्त करना है, संस्कृति का आधार शक्ति प्राप्त करना नहीं, अपितु जीवन बनाना है, जीवन की समस्याओं को समझना और उन्हें सुलझाना है। सांस्कृतिक -क्षेत्र में एकता है, शान्ति है। विचारों की उन धाराओं को जो आज सूखती जा रही है फिर से आप्लावित करना वैदिक-संस्कृति का पुनर्जीवित करना है।

वास्तविक प्रश्न परम्पराओं के साथ चिपटे रहने का नहीं, वास्तविक प्रश्न वैदिक-संस्कृति की आधारभूत, मौलिक विचारधारा को, मौलिक दृष्टिकोण को हाथ से न खो देने का, उस दृष्टिकोण को बनाए रखने का है। बदली हुई परिस्थितियों में जो अपने को नहीं बदल पाता वह टिक नहीं सकता, अपने को परिस्थितियों के अनुसार बदलना जीवन का चिन्ह है, परन्तु हमारी सबसे बड़ी समस्या यह है कि हम बदलते हुए कहीं अपने को अपनी संस्कृति की विचारधारा से बिल्कुल तोड़ते तो नहीं चले जा रहे? **अध्यात्मवाद की विचारधारा को भौतिकवादी युग में क्या रूप देना होगा-यह हमारी असली समस्या है।**

■■

दिनांक	वक्ता	विषय
07	डॉ. सोमवीर आर्य (9999807593)	जीवन का नियम योग नहीं, त्याग है।
14	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	मकर संक्रान्ति का महत्व।
21	डॉ. देव कृष्ण दास (9810764439)	ईशावास्योपनिषद् की व्याख्या।
28	श्री तरंग काण्डपाल (7042748906)	भजन

महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ-

- **लोहड़ी** का पर्व 13 जनवरी, 2024 (शनिवार) को आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 के परिसर में सायंकाल 5:30 से 6:30 बजे तक यज्ञ के पश्चात् मनाया जायेगा। जलपान व चाय का प्रबन्ध रहेगा। सब सदस्य सपरिवार आमंत्रित हैं।
- **माघ माह यज्ञ** - 15 जनवरी, 2024 (सोमवार) से आरंभ होगा। पूर्णाहुति 15 फरवरी, 2024 (बृहस्पतिवार) को सम्पन्न होगी।

दिसम्बर 2023 में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
श्री योगेश मुंजाल – M/s मुंजाल शोवा लिमि.	11,000	डॉ. सुनील अब्रोल एवं श्रीमती सरोज अब्रोल	3,100	श्री अनिल कुमार गुप्ता	2,100
श्रीमती सत्या चौधरी	10,000	श्री तिलक राज आर्य	3,100	श्री विजय सभरवाल	2,100
श्रीमती सतीश सहाय	7,000	श्री सतीश चन्द्र सक्सैना	3,100	श्रीमती सुधा गर्ग	2,100
श्री अरुण बहल	6,500	श्री आई.पी. वाधवान	3,100	श्री महेश कुमार आर्य	2,100
श्री विजय कपूर	5,500	श्री अनूप बहल	3,100	श्री राजीव भटनागर	2,100
M/s बहल बिल्डर्स	5,100	श्री अनिल बहल	3,100	श्री विजय सभरवाल	2,100
श्री रमन मेहता	5,100	श्री नरेंद्र वाधवा	2,600	श्री विजय भाटिया	2,000
श्री संत कुमार वशिष्ट	5,000	श्रीमती अमला ठुकराल	2,100	श्री सुशील कुमार जॉली	2,000
श्रीमती सरिता मेहता	5,000	श्रीमती निशा जावा	2,100	श्री एस.एस. ढींगरा	2,000
श्री पुरुषोतम लाल खांडपुर	3,200	श्रीमती सुशीला गुलाटी	2,100	श्री मूलराज अरोड़ा	1,500
श्रीमती किरण बहल	3,100	श्री ए.पी. नागपाल	2,100	श्रीमती रक्षा पुरी	1,500
श्रीमती माला शर्मा	3,100	श्री विजय भाटिया	2,100	श्री सुभाष अमर	1,100
श्री राजेंद्र कुमार वर्मा	3,100	श्रीमती वनिता कपूर	2,100	श्री अमर सिंह पहल	1,100
श्रीमती उषा मरवाह	3,100	कर्नल गोपाल वर्मा	2,100	श्री बी.आर. मल्होत्रा	1,000
श्री प्रताप गुलियानी	3,100	श्रीमती सुदेश चोपड़ा	2,100	श्री विनोद कुमार चोपड़ा	500
श्रीमती सुनील बहल	3,100	श्री विनोद चोपड़ा	2,100	श्रीमती चेस्टा वाधवा	500

पुरोहित द्वारा एकत्रित धनराशि : ❖ आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ₹ 39,901/–

मेडिकल सेन्टर में प्राप्त दान राशि : ❖ श्री प्रबोध चन्द्र गुप्ता ₹ 5,000/–

नेत्र ऑपरेशन के लिए प्राप्त दान राशि:

❖ श्री आशीष भोनाल ₹ 5,100/– ❖ श्री नरेन्द्र सरुप कालरा ₹ 10,000/–

यज्ञशाला में कुर्सियों के लिए प्राप्त दान राशि :

❖ श्रीमती उषा मरवाह ₹ 50,000/–

अन्य दान :

❖ श्रीमती ऋतु रहेजा 1 Wheel Chair ❖ श्री संजीव कुमार वाधवा 2500 Mask

❖ श्री कपिल पंगाशा (i) Electric Air Bg Mattress (ii) Stool Passing Chair (iii) Walker (iv) B.P. Instrument

❖ **लाला दिवान चन्द ट्रस्ट** ने आर्य समाज को 4 कम्प्यूटर्स के लिए ₹ **1,92,000/–** की राशि दान में दी।

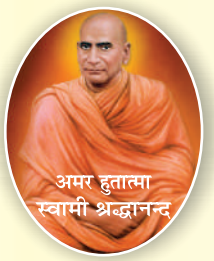

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का 97वें बलिदान दिवस (रविवार, 24 दिसम्बर 2023)

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का 97वाँ बलिदान दिवस-बड़े भव्य तरीके से रविवार, 24 दिसम्बर 2023 को मनाया गया। बलिदान दिवस के कार्यक्रमों का आरम्भ यज्ञ प्रात: 9 बजे से 10 बजे तक हुआ। तत्पश्चात् आगे के कार्यक्रम बृजमोहन मुंजाल वैदिक केन्द्र के सभागार में हुए। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती मीनाक्षी लेखी, केन्द्रीय विदेश राज्यमंत्री, भारत सरकार थीं।

सर्वप्रथम श्री अंकित उपाध्याय के भजन का कार्यक्रम हुआ। इसके पश्चात् अमृत पॉल आर्य शिशु शाला के विद्यार्थियों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत हुआ। विद्यार्थियों ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर एक अति सुन्दर गीत प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् विद्यार्थियों ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन के बारे में एक लघु नाटिका का मंचन किया। अंत में विद्यार्थी अंकित ने 'कर्मफल' का सिद्धान्त समझाया।

श्री विजय लखनपाल, प्रधान ने सभी का स्वागत किया और स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रारंभ के जीवन के बारे में बहुत सी प्रमुख बाताकें का उल्लेख किया। इस अवसर पर श्रीमती अमृत पॉल जी ने श्री विजय लखनपाल, प्रधान का उनके कार्य के लिए सम्मानित किया।

श्री विनय आर्य जी, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, ने सभा को सम्बोधित किया। उन्होंने स्वामी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के द्वारा किए गए महत्त्वपूर्ण कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया।

अंत में मुख्य अतिथि श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी का सम्बोधन हुआ। उनहोंने भी स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन और उनके द्वारा किए गए कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया तथा उनके अनेक कार्यों की प्रशंसा की।

सभागार का कार्यक्रम शान्ति पाठ के द्वारा संपन्न हुआ।

वैदिक केन्द्र के नीचे वाले तल पर सभी अतिथियों के लिए ऋषि लंगर का प्रबन्ध किया।

इस बलिदान दिवस के कार्यक्रम में लगभग 450-500 व्यक्तिय उपस्थित थे।

श्री अंकित उपाध्याय जी भजन प्रस्तुत करते हुए।

अमृत पॉल आर्य शिशु शाला के विद्यार्थी गीत प्रस्तुत करते हुए।

अमृत पॉल आर्य शिशु शाला के विद्यार्थी स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर लघु नाटिका प्रस्तुत करते हुए।

श्री विजय लखनपाल जी, श्री विनय आर्य जी, श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी, श्री राजेन्द्र विद्यालंकार जी व श्री सिद्धार्थ जी मंच पर बैठे हुए।

श्रीमती अमृत पॉल जी, श्री विजय लखनपाल, प्रधान जी का शॉल द्वारा सम्मान करते हुए।

श्री विनय आर्य, महामंत्री, दि.आ.प्र.स. जी सम्बोधित करते हुए।

श्रीमती मीनाक्षी लेखी, राज्यमंत्री अध्यक्षीय संबोधन देते हुए।

श्री राजेन्द्र विद्यालंकार जी सम्बोधित करते हुए,
साथ में राजेन्द्र कुमार वर्मा जी व श्री विनय आर्य जी

सभागार में उपस्थित सदस्यगण व अतिथिगण

सभागार में उपस्थित सदस्यगण व अतिथिगण